प्रेम करने की शक्ति

(3:14-21)

ज़्या आप प्रार्थना में बड़ी-बड़ी चीज़ें मांगते हैं ? ई. एम. बाउंड्स ने प्रार्थना के बारे में ये विचार दिए हैं: ''पृथ्वी पर या स्वर्ग में, समय या अनन्तकाल के लिए कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो परमेश्वर के पुत्र ने हमारे लिए सुरक्षित नहीं की ... परमेश्वर हमें 'अनुग्रह के सिंहासन पर दृढ़ता से आने' का आदेश देता है। बड़ी मांग से परमेश्वर की महिमा और मसीह का सज़्मान होता है।'' ज़्या स्थानीय कलीसिया का आपका परिवार ''बड़ी मांग'' से परमेश्वर की महिमा और मसीह का सज़्मान करता है ?

पौलुस जानता था कि बड़े स्तर पर प्रार्थना करना कैसा होता है। 3:14-21 में, उसने स्थानीय कलीसिया अर्थात इफिसुस में मसीह की देह के लिए प्रार्थना की थी। स्थानीय कलीसिया द्वारा इससे अच्छी प्रार्थना और ज़्या हो सकती थी ? ''बड़ी मांग'' से परमेश्वर की महिमा और मसीह का आदर होता है।

> मैं इसी कारण उस पिता के साज़्हने घुटने टेकता हूं, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर घराने का नाम रखा जाता है। कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुज़्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा के अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। और विश्वास के द्वारा मसीह तुज़्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शाज़्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लज़्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन। (3:14-21)

इस प्रार्थना की समीक्षा करके हम तीन आवश्यक सबक सीखेंगे।

परमेश्वर दूसरों से प्रेम करने की शक्ति देता है

पौलुस के दिमाग में मसीह की देह ही थी। वह चाहता था कि मसीह की देह परमेश्वर की इच्छाओं के अनुरूप बन जाए। उसने एक सुदृढ़, संगठित और प्रेम करने वाली स्थानीय कलीसिया का स्वप्न देखा था।

ऐसी कलीसिया होने के लिए ज़्या आवश्यक था? इसके लिए परमेश्वर की शक्ति की आवश्यकता थी, और यही पौलुस की प्रार्थना थी। आयत 16 कहती है, ''कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुझें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा के अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। और विश्वास के द्वारा मसीह तुझारे हृदय में बस ...'' (3:16,17)।

स्थानीय कलीसिया की सबसे बड़ी आवश्यकता ज़्या है? किसी मण्डली की आवश्यकता इससे अधिक ज़्या होती है? किसी का जवाब हो सकता है, ''हमें एक नई बिल्डिंग चाहिए।'' कोई दूसरा कह सकता है, ''हमें अपनी सेवकाइयों में अधिक लोगों की आवश्यकता है।'' कोई दूसरा सुझाव दे सकता है, ''हममें कुड़कुड़ाना और शिकायत करना बंद होना चाहिए।''

पौलुस मसीही लोगों को समझाना चाहता था कि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता शक्ति, अर्थात परमेश्वर की सामर्थ की है। हमारे जीवनों में यह शक्ति *प्रार्थना* से मिलने लगती है। किसी स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर को भाने के लिए, ईश्वरीय शक्ति का होना आवश्यक है, जो प्रार्थना से ही मिलती है। पौलुस यह जानता था, सो उसने गंभीरता से इसके लिए प्रार्थना की, जो उसे सचमुच घुटनों पर ले आई।

यह शक्ति प्रार्थना के साथ आरज़्भ होती है, परन्तु यह शक्ति काम कहां से करती है? आयत 16 कहती है कि परमेश्वर की शक्ति ''भीतरी मनुष्य'' से काम करती है। ''भीतरी मनुष्य'' मसीही व्यक्ति के विचारों, कार्यों, उद्देश्यों और भावनाओं का कंट्रोल रूम होता है। इस कंट्रोल रूम को सही ढंग से चलाने के लिए ईश्वरीय ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

मेरे पास एक लैपटॉप कज़्प्यूटर है। कभी-कभी थोड़ी देर के लिए यह बैटरी पर चलता है। लेकिन किसी समय हरी बज़ी बुझ जाने पर इससे आवाज आने लगती है। इसका अर्थ यह होता है कि इसकी ऊर्जा खत्म होने वाली है। कज़्प्यूटर चलाते रहने के लिए मेरे पास कहीं और से और ऊर्जा लेने के सिवाय और कोई चारा नहीं होता।

आप आत्मिक बैटरी पर नहीं चलते, परन्तु आप में बैटरी जितनी ही भीतरी ऊर्जा है। हो सकता है कि आप इससे पढ़ते समय अच्छा कर रहे हों अर्थात आपके जीवन में हरी बज़ी चमक रही हो। हो सकता है कि आप में भीतरी शक्ति काफी मात्रा में हो। दूसरी ओर, हो सकता है कि आप की आत्मिक ऊर्जा खत्म होने वाली हो। पता चले कि अपना आप सज़्भालने के लिए आपके पास बहुत कम ऊर्जा रह गई है, इतनी कम कि दूसरों की आवश्यकताओं या चिंताओं पर कोई ध्यान नहीं देते।

कैंसर से लड़ते हुए अपने जीवन के कुछ अति निराशाजनक दिनों के दौरान, रैंडी बैज़्टन की न सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक और आत्मिक ऊर्जा भी कम हो गई थी। उसे ऊर्जा का स्रोत परमेश्वर में मिला। इस बात का उसने ''सो हैल्प मी, गॉड'' शीर्षक से लिखी कविता में वर्णन किया, जिसका अनुवाद इस प्रकार है:

वह पीड़ा
तेरे बिन

अब सही नहीं जाती।
थकावट और भय पर
तेरे बिना
मैं काबू नहीं कर सकता।
मेरा जीवन तेरे बिना अंधेर और
बुझती हुई मोमबज़ी है
मैं मानता हूं:
तेरे बिना
मुझे मौत से डर लगता है।
तेरे बिना
मुझे और कहीं से विश्वास नहीं मिलता।
सो हे परमेश्वर, मेरी मदद कर
कि मैं तेरे साथ
एक कदम उठा सकूं।
तू ही मेरी एक मात्र आशा है।[2]

परमेश्वर की शज़्ति की आवश्यकता हमें ''भीतरी मनुष्यत्व'' में होती है।

पौलुस की प्रार्थना से कुछ और बातों पर ध्यान दें। परमेश्वर द्वारा हमें दी जाने वाली शज़्ति का *उद्देश्य* आयत 17 में मिलता है: ''और विश्वास के द्वारा मसीह तुज़्हारे हृदय में बसे ...'' (आयत 17)। दो यूनानी शज़्दों का अनुवाद क्रिया शज़्द ''बसे'' के रूप में हो सकता है। एक का अर्थ अस्थाई तौर पर किसी जगह रहना है। दूसरे यूनानी शज़्द का अर्थ है ''बस जाना।'' यह होटल के कमरे और घर में रहने के अन्तर की तरह है। एक वह जगह है जहां हम अस्थाई तौर पर रह सकते हैं; परन्तु दूसरी वह है, जहां हम वास्तव में रहते हैं। पौलुस ने इस पद में दूसरे शज़्द (यू.: *katoikeo*) का इस्तेमाल किया। उसके दिमाग में स्थाई निवास की बात थी।

पौलुस ने प्रार्थना की थी कि परमेश्वर प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों में अपनी सामर्थ उण्डेले ताकि यीशु हमारे मनों में अपना घर बना सके। यीशु हमारे हृदयों में अतिथि बनकर नहीं रहना चाहता। वह हमारे जीवनों के अतिथि पुस्तिका पर अपना नाम नहीं लिखाना चाहता। वह उसके मन में स्थाई तौर पर वास करना चाहता है।

हमें कैसे पता कि यीशु हमारे जीवनों में निवास करता है? हमें कैसे पता चलता है कि वह हमारे अन्दर वास करता और स्थानीय कलीसिया में रहता है? पौलुस ने कहा कि जब सचमुच किसी मण्डली में परमेश्वर की शज़्ति होती है, तो वहां मसीही लोगों में प्रेम दिखाई देता है। हम ''प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर'' रहने लगेंगे। किसी मण्डली में पाया जाने वाला प्रेम प्रभु की उपस्थिति का संकेत देता है। इस सिद्धांत को दोहराया जाना चाहिए: कलीसिया में पाया जाने वाला प्रेम प्रभु की उपस्थिति का संकेत देता है।

भाई विलर्ड टेट ने स्थानीय कलीसिया में प्रेम के महत्व पर ज़ोर दिया:

मुझे याद है कि एक बार मैं किसी सेमिनार में भाग लेने के लिए डैलस के एक नगर के उज़र में जा रहा था। ... और मुझे पज़्का पता नहीं था कि वह कलीसिया कहां है। सो मैं 7-11 स्टोर में रुक गया और यहां से मुड़ते ही मुझे कलीसिया की बिल्डिंग दिख गई। मैं गैस भर रहे एक लड़के के पास जाकर उससे पूछने लगा कि चर्च बिल्डिंग कहां है।

''मालूम नहीं,'' उसने जवाब दिया।

फिर मैंने अंदर जाकर दुकानदार से पूछा। उसे भी चर्च बिल्डिंग का पता नहीं था। हमने टेलिफोन डायरेज़्टरी में देखा!

ये लोग कलीसिया के विरोधी नहीं थे। उन्हें पता ही नहीं था कि चर्च बिल्डिंग वहां पर है! ...

दुर्भाग्यवश, मेरे साथ ऐसा कई बार हुआ है। पर आप जानते हैं कि मैं ज़्या सुनना चाहता था; मैं चाहता था कि वे लोग मुझे बताते, ''एक मण्डली है जो वहां पहाड़ी पर इकट्ठी होती है। मुझे यह तो मालूम नहीं कि वे लोग कौन हैं या ज़्या कहलाते हैं, लेकिन वे बहुत ही भले लोग हैं। वे एक दूसरे का ध्यान रखते हैं और एक दूसरे की आवश्यकताओं को भी पूरा करते हैं। आप स्वयं जाकर उन्हें देख लें कि वे कौन हैं।''[3]

कलीसिया में मिलने वाले प्रेम से पता चलता है कि प्रभु की प्रस्तुति उसमें है। परमेश्वर स्थानीय कलीसिया में मसीही लोगों को एक दूसरे से प्रेम करने की शज़्ति देता है।

परमेश्वर यीशु के प्रेम को समझने की शक्ति देता है

पौलुस चाहता था कि मसीही लोग मसीह के प्रेम के आयामों को समझ लें:

... कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शज़्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लज़्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, (3:17ख-19क)।

आपने कभी सागर की लहरों के पास खड़े होकर देखा है? ज़्या आप बहुत ऊंची घाटी पर गए हैं? कल्पना करें कि प्रशांत महासागर को मापने के लिए स्कूल में बच्चों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले प्लास्टिक का स्केल कितना सार्थक लगेगा। उस बड़ी घाटी के एक-एक इंच को मापने के लिए कितने लज़्बे स्केल की आवश्यकता होगी। आपके लिए यीशु के प्रेम को मापने के लिए समय और प्रयास को मापने के लिए ऐसे ही मापक का इस्तेमाल किया जा सकता है।

बच्चों का एक गीत है, ''दुनिया में सबसे प्यारा दोस्त है यीशु।'' हम यीशु के प्रेम को तब तक नहीं समझ सकते जब तक उसे समझने की शज़्ति हमें परमेश्वर से न मिले।

मसीह के प्रेम की *चौड़ाई* को समझने के लिए परमेश्वर की शज़्ति आवश्यक है।

उसका प्रेम सज़्पूर्ण मनुष्य जाति के लिए अर्थात संसार के हर पुरुष, स्त्री, लड़के और लड़की के लिए है। वह आपको नाम से जानता है। आज से नहीं, हमेशा से वह आपको जानता है। वह आपको पहचानता है। यीशु आपकी हंसी की आवाज को पहचान लेगा। वह तुरन्त पहचान लेगा कि यह आपकी आवाज है। वह उन घावों को भी जानता है जो आपने दूसरों से छिपाए हैं। आपको उसे प्रभावित करने की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है कि वह आपको पसन्द करता है या नहीं। यीशु आपसे प्रेम करता है।

मसीह के प्रेम की *लज़्बाई* को समझने के लिए परमेश्वर की शज़्ति आवश्यक है। उसका प्रेम अनन्तकाल से अनन्तकाल तक का है। उसने आपको आपके जन्म से पहले प्रेम किया है। वह आपको संसार में किसी भी दूसरे व्यज़्ति से इस समय अधिक प्रेम करता है और सदा करता रहेगा। आप उसे प्रेम करें या न तो भी वह आपसे प्रेम करता है। आपको प्रेम करने से यीशु को कोई नहीं रोक सकता।

हमारा संसार उस खत्म न होने वाले, बिना डोरी के प्रेम को समझना कठिन बना देता है। हम ''यदि'' वाले प्रेम अर्थात शर्तों वाले प्रेम के आदी होते हैं। हमें तो ''जब तक'' वाले प्रेम का ही पता होता है: लोग प्राय: हमें तभी प्रेम करते हैं *जब तक* हम उनकी अपेक्षाओं पर पूरा उतरते हैं। परन्तु यीशु हम से शर्तरहित अर्थात ''न खत्म होने वाला प्रेम'' करता है।

मसीह के प्रेम की *ऊंचाई* को समझने के लिए परमेश्वर की शज़्ति की आवश्यकता है। वह पिता के साथ स्वर्ग में है और यही वह चाहता है कि हम भी वहां हों। उसका प्रेम इतना ऊंचा है कि हम उससे कम से समझौता न करें। शैतान कर लेता है। वह हमें कपड़ों, कारों, नौकरी, खेलों और काम में इतना उलझा देता है कि हम उसे जो यीशु हमें देना चाहता है, नहीं ले पाते। यीशु हमें स्वर्ग, अनन्त जीवन, पूर्ण आनन्द, शांति और उस घर के साथ जो उसने केवल हमारे लिए बनाया है, हमारे स्वर्गीय पिता के साथ होने का सौभाग्य भी देना चाहता है।

मसीह के प्रेम की *गहराई* को समझने के लिए परमेश्वर की शज़्ति आवश्यक है। यह इतना गहरा है कि यीशु ने पृथ्वी पर आकर चरनी में जन्म लेने के लिए स्वर्ग को अलविदा कह दिया, इतना गहरा है कि यीशु अपनी इच्छा से क्रूस पर मर गया, इतना गहरा कि यीशु ने उस क्रूस पर अपनी देह में हमारे सब पाप उठा लिए, इतना गहरा कि यीशु हमारा उद्धारकर्ज़ा, प्रभु और मित्र बनने के लिए कब्र से बाहर निकल आया अर्थात जी उठा।

मेरी थ्यौरी यह है: जब मसीह के अनुयायी हमारे लिए उसके प्रेम की वास्तविज़्ता से अभिभूत होकर भयभीत होंगे तो हमारे जीवन बदल जाएंगे। हम मसीह के प्रेम को समझकर लोगों के साथ दुर्व्यवहार करते नहीं रख सकते। हम मसीह के प्रेम को समझकर उसे बोतल में बंद करके नहीं रख सकते। यह प्रेम दूसरों के लिए बाहर निकलना ही चाहिए। हम मसीह के प्रेम को समझकर किसी दूसरे के साथ कठोर या उसका अपमान नहीं कर सकते, ज़्योंकि हम जानते हैं कि यीशु उस व्यज़्ति से कितना प्रेम करता है।

उसकी आराधना और महिमा करने की इच्छा के बिना हम मसीह के प्रेम को नहीं

समझ सकते। हम हर प्रकार से उसकी सेवा और उसका सम्मान करने की इच्छा किए बिना मसीह के प्रेम को नहीं समझ सकते।

हमें यह याद रखना चाहिए कि मसीह के प्रेम को समझने की शक्ति हमारे अन्दर से नहीं निकलती। इसके लिए हमें घुटनों पर झुककर प्रार्थना करनी चाहिए। इसे समझने की शक्ति केवल परमेश्वर ही देता है। अपनी स्थानीय मण्डली में परमेश्वर के सामर्थ के बहाव के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना करें कि मसीह में आपके भाइयों तथा बहनों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एक-दूसरे से प्रेम करने की शक्ति मिले। अपने लिए और अपनी मण्डली के लिए उस समझ को पाने की शक्ति के लिए प्रार्थना करें क्योंकि इससे पहले कभी आपको यीशु का अद्भुत प्रेम नहीं मिला है। कुछ समय निकालकर विशेष तौर पर कलीसिया के हर व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। उसके जीवन में परमेश्वर की शक्ति के लिए प्रार्थना करें, जिसका उस व्यक्ति को पता बाद में चले। उसे बताएं कि आपने उसके लिए प्रार्थना की थी।

परमेश्वर हमें परमेश्वर की भरपूरी से परिपूर्ण होने की शक्ति देता है

पौलुस ने स्थानीय कलीसिया के लिए प्रार्थना की कि वह ''मसीह के उस प्रेम को जान सके जो ज्ञान से परे है।'' क्यों? आयत 19 इसका कारण बताती है: कि ''परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण'' हो जाए।

जे. विल्बर चैपमैन एक आदमी की कहानी बताते थे जो अपने परिवार से कई साल तक अपनी मर्जी से अलग रहा था। जो जीवन उसने चुना था उसने उसका नाश कर दिया। वह फटे हुए कपड़े पहने घूमता, और जिंदा रहने के लिए भीख मांगता था। एक दिन, वह आदमी स्टेशन के पास हाथ फैला रहा था। उस भिखारी ने गाड़ी से उतरते हुए एक यात्री की पीठ थपथपाई।

''महोदय, क्या आप मुझे एक पैसा दे सकते हैं? केवल एक पैसा?'' वह यात्री मुड़ा और भिखारी ने उसका हाथ खींच लिया। भिखारी ने उस यात्री के चेहरे को देखा। ... और देखते ही उसका चेहरा सफेद पड़ गया। वह यात्री उसका पिता था। उसने कई साल से उसे नहीं देखा था।

''डैडी, क्या आप जानते हैं कि मैं कौन हूं?'' उसने पूछा।

पिता ने अपने बेटे को बाहों में भर लिया। उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे। ''बेटा, मैंने आखिर तुझे ढूंढ़ ही लिया। इतने सालों बाद, तू मुझे मिल गया है। तुझे एक पैसा चाहिए? मेरा सब कुछ तेरा ही है।''[4]

हम में से कितने लोग उस भिखारी की तरह हैं? हम केवल पैसे मांगते हैं, जबकि हमारा स्वर्गीय पिता हम पर सारा स्वर्गीय धन बरसा देना चाहता है। सिनेमा हॉल में फिल्म देखने जाकर, स्कूल के लिए नये कपड़े खरीदकर, या काम में तरक्की पाकर हम सोचते हैं कि हमने जीवन पा लिया है। हमें लगता है कि होटल में या पार्टी में मित्रों के साथ भोजन करना ही जीवन है। रिटायर होने तक हम काम करते रहते हैं ताकि जीवन के बाकी वर्ष

आराम से कट सकें। हम पैसे लेकर चुप हो जाते हैं जबकि हमारा पिता हमें ''परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण'' करना चाहता है।

''परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण'' होने का ज़्या अर्थ है ? इसका अर्थ यीशु जैसा होना अर्थात उसका मन पाना; उसके विचार पाना; उसके जैसा काम करना; उसके जैसा दयालु होना, उसका प्रेम, परमेश्वर की इच्छा के प्रति उसके समर्पण को पाना है। इसका अर्थ पिता में उसका भरोसा, जीवन के लिए उसकी उमंग, उसका आनन्द और उसकी भलाई पाना है। इसका अर्थ पिता की महिमा और सज़्मान के लिए यीशु की क्षमता पाना है। यही जीवन है।

सारांश

परमेश्वर की यह हार्दिक इच्छा है कि हर स्थानीय कलीसिया में उसकी शज़्ति हो। वह चाहता है कि मण्डलियों में वह शज़्ति हो जो मसीही लोगों को एक दूसरे से प्रेम करने, हमारे लिए यीशु के प्रेम को समझने और यीशु जैसा बनने में सामर्थ देती है।

यदि आप प्रेम करने वाले लोगों के साथ संघर्ष करते हैं या आपको यह विचार समझ नहीं आता कि यीशु आपसे कितना प्रेम करता है, तो प्रार्थना करें। यदि आप अपने आप को यीशु जैसा बनाने की कोशिश करते हुए अपने आप को ही रोड़ा मान रहे हैं तो प्रार्थना करें।

परमेश्वर आपको ऐसी प्रार्थना के उज़र से चकित करेगा।

> अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन॥ (3:20, 21)

टिप्पणियां

[1]जैक टेयलर, *प्रेयर: लाईफ़'स लिमिटलैस रीच* (नैशविल्ले, टैनिसी: ब्रॉडमैन प्रैस, 1977), 15 में उद्धृत ई. एम. बाउंड्स। [2]रैंडी बैज़्टन, *कमिंग टू ग्रिप्स बिद गॉड* (अबिलेन, टैज़्सस: रैंडी बैज़्टन, 1977), 111. [3]विलर्ड टेट, *लर्निंग टू लव* (नैशविल्ले, टैनिसी: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1988), 77. [4]मैज़्स एंडर्स, *द गुड लाइफ़: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ़'' वर्ल्ड* (डेलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 78-79.